E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2020; 2(1): 13-15
Received: 08-11-2019
Accepted: 12-12-2019

प्रतिमा सिंह
शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Corresponding Author:
प्रतिमा सिंह
शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

वैश्वीकरण का अवधारणात्मक विकास व महिला सशक्तीकरण

प्रतिमा सिंह

सारांश
''वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग कई तरह से हुआ है। एक अर्थ तो शाब्दिक है कि अब राष्ट्रों के बीच की भौगोलिक दूरी बेमानी हो गयी है। दुनिया काफी छोटी हो गयी है और कोई देश अपना नुकसान करके ही शेष विश्व से खुद को अलग रख सकता है। वैश्वीकरण का दूसरा अर्थ ठीक उल्टा निकाला जा सकता है, जिसके अनुसार यह देशी हितों की जगह दूसरे देशों के बहुउद्देशीय निगमों के हितों को उपर रखने वाले नीतिगत बदलाव का नाम है।''

डॉ0 विमल जॉलान,
पूर्व गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक

मूल शब्दः– वैश्वीकरण, औद्योगीकरण, विकास, पूंजीवाद, बाजार व्यवस्था आदि।

प्रस्तावनाः–
यद्यपि कि एक व्यवस्थित अवधारणा के रूप में वैश्वीकरण बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध की विषय वस्तु है तथापि इसके उद्भव का समय प्राचीन काल तक जाता है। प्राचीन काल में घर्म जुड़ाव का एक प्रमुख का आधार था। चाहे वह सम्राट अशोक के धम्म की बात हो या चाहे ईसाई मिशनरियों द्वारा ईसाई धर्म के प्रचार या फिर इस्लाम आक्रान्ताओं द्वारा इस्लाम धर्म का प्रचार की बात हो। ये सभी तत्कालीन समय में एक साम्राज्य को दूसरे साम्राज्य से जोड़ने अथवा प्रभावित करने के सन्दर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण थे। यह सर्वमान्य है कि वैश्वीकरण आधुनिक युग की अवधारणा है मगर वैश्वीकरण के विकास की मूलभूत कारण एवं कालक्रम के सन्दर्भ में विद्वान एकमत नहीं है। वैश्वीकरण को परिभाषित करते हुए स्टेगर का कहना है कि वैश्वीकरण एक विशेष प्रकार की सामाजिक स्थिति है जिसमें वैश्विक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय अन्तः सम्बन्ध स्थापित हैं और वे गतिशील हैं और जिनके कारण इस स्थिति के पूर्व में स्थापित सभी प्रकार की सीमाओं को अप्रासंगिक बनातें हैं। वहीं वैश्वीकरण को परिभाषित करते हुए फ्रेडरिक जेमसन का कहना है कि 'वैश्वीकरण की अवधारणा वैश्विक संचारण की अभूतपूर्व वृद्धि के रू॰ में देखी जा सकती हे। इसमें वैश्विक बाजार की असीमितता को भी लिया जा सकता हे। ये दोनों बातें आधुनिकता के किसी भी चरण से अधिक व्यापक एवं प्रभावी है।'
वैश्वीकरण के अवधारणात्मक विकास के संदर्भ में रॉबी रॉबर्टसन की मान्यता विशेष उल्लेखनीय है। रॉबी रॉबर्टसन ने सन 2002 में प्रकाशित अपनी प्रमुख पुस्तक 'द थ्री वेब्स ऑफ ग्लोबलाइजेशनः ए हिस्ट्री ऑफ ए डेवलपिंग ग्लोबल कंसेशनेस' में वैश्वीकरण के विकास को निम्नलिखित तीन चरणों में वर्गीकृत किया हैः–

- सन् 1492 से 18 वीं सदी की औद्योगिकरण तक, जिसमें विभिन्न खोजों जैसे भारत अमरीका आदि से प्रारंभ करके औद्योगीकरण के पूर्व की व्यापार प्रक्रिया को शामिल किया जाता है।
- 18 वीं सदी से द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व तक, जिसके अंतर्गत वैश्वीकरण के विकास के पीछे प्रमुख कारण, औद्योगीकरण से प्राप्त अधिक उत्पादकता रहा है। विभिन्न औद्योगिक देशों को अधिक उत्पादकता के कारण नए बाजार की आवश्यकता ने विभिन्न देशों में आर्थिक व सामाजिक जुड़ाव को प्रेरित किया। यह वह दौर था जब समूचे वैश्विक परिदृश्य पर उपनिवेशवाद हावी था।
- द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत अर्थात् इस दौर में विभिन्न देश स्वतंत्र होते गए, नई अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं संगठनों की स्थापना हुई तथा सन् 1980 के दशक तक आते आते वैश्वीकरण एक व्यापक रूप धारण कर लिया।

रॉबी रॉबर्टसन की मान्यता का समर्थन बैलेंसटीन भी करते हैं। बैलेंसटीन वैश्वीकरण के विकास के

संदर्भ में पूंजीवाद को प्रमुख कारण मानते हैं। उनका कहना है कि रेनेसॉ के साथ ही वैश्वीकरण का विकास प्रारंभ हो गया था। बैलेंसटीन का मानना है कि पूंजीवाद की बढ़ती प्रवृत्ति से उत्पादन बढ़ा है तथा एक नई बाजार व्यवस्था का जन्म हुआ है, एक ऐसे बाजार व्यवस्था का जिसका स्वरूप अंतरराष्ट्रीय हो गया है। यह बाजार व्यवस्था पूंजीगत लाभ के लिए उद्योगपतियों को आकर्षित करने लगा, जिसके फलस्वरूप कच्चे माल, सस्ते श्रम व नए बाजार की खोज आरंभ हुई। इसके साथ–साथ निवेश में भी भारी वृद्धि से और अधिक उत्पादन और इससे और अधिक लाभ प्राप्त करने की उत्कंठा ने एक 'विशेषीकृत व्यापार चक्र' को जन्म दिया जिसके परिणामस्वरूप ऐसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों व निगमों का उदय हुआ जिसके प्रभाव में साथ साथ ही वैश्वीकरण का भी उदय हुआ।

एक अन्य विद्वान रोनाल्डो रॉबर्टसन ने वैश्वीकरण के विकास क्रम को पांच भागों में विभाजित किया है, जो है–

- सन् 1480 से सन् 1750 तक, वैश्वीकरण के बीजाणु का युग, जिसमें राष्ट्र राज्य पर धर्म की पकड़ ढीली हो गई थी।
- सन् 1750 से सन् 1875 का युग, अर्थात वैश्वीकरण के उद्भव युग, जिस में यूरोप में राष्ट्रवाद व अंतर्राष्ट्रीयतावाद प्रफुल्लित हो रहे थे।
- सन् 1875 से सन् 1925 का युग, अर्थात वैश्वीकरण के विस्तार का युग, जिसमें उपनिवेशवाद अपने चरम पर था।
- सन् 1925 से सन् 1969 का युग, अर्थात प्रभुता के लिए संघर्ष का युग, जिसके उपरान्त संयुक्त राष्ट्र संघ सहित कई अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की स्थापना की गई।
- सन् 1969 से सन् 1992 का युग, जिसमें शीत युद्ध की शिथिलता तथा सोवियत संघ के विघटन के उपरांत उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण का आधुनिक युग प्रारंभ हुआ।

आज हम वैश्वीकरण के विकास के संदर्भ में उपरोक्त चरणों में एक अन्य चरण के रूप में सन् 1993 से अब तक के समय को सम्मिलित कर सकते हैं। यह वह दौर है जिसके प्रारंभ में विश्व को आर्थिक मंदी का सामना करना पड़ा तथा यहीं से उदारीकरण का व्यापक दौर प्रारंभ हुआ। अंतरिक्ष में शोध का स्तर बढ़ता गया। इसके साथ–साथ विभिन्न विश्व स्तरीय समस्याएं भी उभर कर सामने आईं, यथा पर्यावरणीय समस्या, ग्लोबल वार्मिंग, आतंकवाद आदि, जो विश्व समुदाय को एकजुटता के लिए प्रेरित किया तथा परिणामस्वरूप वैश्वीकरण का वृहद स्तर पर विस्तार हुआ। जिसके उपरांत राष्ट्र राज्य की अवधारणा 'अंतर्राष्ट्रीयतावाद व अंतर्राज्य व्यवस्था' की अवधारणा में प्रतिस्थापित हो गई। जिसके परिणामस्वरूप जहां एक और वैश्वीकरण सुदृढ़ होता गया वहीं एक राष्ट्र का निजता निरंतर कमजोर होती गयी। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में आई सूचना क्रांति ने संपूर्ण विश्व परिदृश्य को ही बदल दिया है। मोबाइल फोन, स्मार्टफोन के साथ–साथ फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर आदि के माध्यम से विश्व भर की सूचनाएं हमें बिना विलंब किए प्राप्त होना संभव हो गया है जिसके परिणाम स्वरूप 'साइबर क्राइम', आतंकवादी घटनाओं में भी वृद्धि हुई है।

वैश्वीकरण का विकास व महिला सशक्तीकरण

20 वीं सदी में लोकतांत्रिक व्यवस्था की बहुलता तथा लोक कल्याणकारी शासन व्यवस्था के साथ निरंतर समतामूलक समाज की स्थापना की मांग जोर पकड़ती गई। विभिन्न देशों में इसके लिए आंदोलन चलाएंगे गए। स्त्री मताधिकार, स्त्री पुरुष समानता आदि मुद्दों को विभिन्न आंदोलनों के आधारभूत मुद्दों के रूप में स्वीकृति मिली। वैश्वीकरण के दौर में लैंगिक विषयों पर आधारित आंदोलन का स्वरूप एक राष्ट्र राज्य की सीमा से बाहर निकलकर वैश्विक होता गया। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंत्रों, विभिन्न साहित्यिक रचनाओं में स्त्रियों के आर्थिक विकास में भागीदारी, सामाजिक न्याय की स्थापना के मुद्दों को प्रमुखता दी गई। भारत सहित अनेक विभिन्न देशों में राजनीतिक संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण की मांग जोरों पर रही। भारत में तो स्थानीय स्तर पर राजनीतिक निकायों में एक तिहाई स्थानों का आरक्षण पहले से ही विद्यमान है। वैश्वीकरण ने जहॉ कुछ महिलाओं को रोजगार का व्यापक अवसर प्रदान किया है तो वहीं बहुत सी महिलाओं को हासिए पर भी ढकेला है। देश एवं समाज को उन्नत बनाने के वैश्वीकरण के दावे में कितनी सच्चाई है इसे उसकी आलोचनात्मक मूल्यांकन से देखा जा सकता है। निःसंदेह वैश्वीकरण के युग में महिलाओं की उन्नति और विकास के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध हुए है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत महिलाओं को राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक प्रकृति में भागीदार बनाए जाने के प्रयत्न भी किए जाते रहे हैं। निरन्तर महिलाओं के अनुकूल रोजगार का निर्माण भी किया जा रहा है। आज महिलाएं स्वयं को ज्यादा स्वतंत्र और आत्मनिर्भर महसूस कर रही हैं और विकास की प्रक्रिया में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं।

वैश्वीकरण के साथ उदारीकरण व निजीकरण भी आया, जिसके परिणामस्वरूप आरम्भ हुए मशीनीकरण के युग में महिला कामगारों की संख्या निरन्तर कम हुई हैं। मशीनीकरण के सन्दर्भ में यह माना जाता है कि एक मशीन एक समय में कई कामगारों का काम अकेले ही कर सकती है। निजी क्षेत्र की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के सन्दर्भ में यह स्थिति और भी चिन्ताजनक है। अगर निजी क्षेत्र की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा महिला कामगारों को काम दिया भी जा रहा है तो ऐसे कामगार को जो अच्छी शिक्षा प्राप्त हैं, युवा हैं, न कि ऐसी महिला कामगार को जो कही कार्यरत थी और किसी कारण वश उसे काम से निकाल दिया गया हो। इसके साथ–साथ वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप महिलाओं के विरूद्ध होने वाली धटनाओं में भी वृद्धि देखी गयी है।

महिलाओं के विकास, महिला सशक्तिकरण के लिए वैश्वीकरण के विभिन्न प्रयत्नों के बावजूद भारत में इसका प्रभाव कई क्षेत्रों में सकारात्मक होने के साथ–साथ व्यापक नकारात्मक भी रहा है। सबसे पहले तो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दौर में महिलाओं का वस्तुकरण हो रहा है, वे प्रदर्शन की चीज बनती जा रही हैं, कंपनियों द्वारा अपने उत्पादों की बिक्री हेतु महिलाओं को गलत ढ़ग से प्रस्तुत किया जा रहा है। भारत में लगभग कुल श्रमिकों का 31 प्रतिशत हिस्सा महिला श्रमिकों का हैं, जिसमें से 95.6 प्रतिशत महिला श्रमिक असंगठित क्षेत्रों में काम करती हैं। ये ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें ना तो अच्छा वेतन है, ना काम के निश्चित घंटे, ना ही काम की उचित मानवीय दशा, ना कोई काम की सुरक्षा (रोजगार सुरक्षा का अभाव), और ना ही सामाजिक सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था उप्लब्ध होती है। प्रतिस्पर्धा के युग में उत्पन्न तनाव, महिलाओं में मानसिक व शारीरिक थकान, काम के लंबे घंटे आदि स्वास्थ्य के लिए तो हानिकारक है ही साथ ही ये सभी परिस्थितियॉ सामाजिक व पारिवारिक संबंधों के लिए भी घातक हैं। ये परिस्थितियां औरत के सन्दर्भ में सामाजिक न्याय की स्थापना की दृष्टि से सबसे बड़ी बाधा रही हैं। वैश्वीकरण के चलते बी0 पी0 ओ0, कॉल सेंटर आदि महिलाओं हेतु रोजगार बनकर उभरे हैं पर इनमें काम करने वाली महिलाओं की सुरक्षा पर अक्सर सवाल खड़े होते रहे हैं। वैश्वीकरण ने महिलाओं को जहां एक ओर उपभोक्ता बनाया है तो वहीं दूसरी ओर उन्हें उत्पादक भी बनाया है। इस संबंध में 'MARIA MIES' नामक महिला ने वैश्वीकरण का महिलाओं पर क्या प्रभाव पड़ता है, पर अध्ययन किया है। जिसके अन्तर्गत उसने माना है कि वैश्वीकरण से महिला एकता में बाधा उन्पन्न हो रही है क्योंकि वैश्वीकरण

की प्रक्रिया उपभोक्ता और उत्पादक के बीच तनाव उत्पन्न करता है। वैश्वीकरण के फलस्वरूप एक देश में महिलाएं समान बनाती हैं और दूसरे देश में बेचती हैं। इस सन्दर्भ में यदि हम कपड़े के उद्योग का उदाहरण लें तो कपड़े के उद्योग में काम करने वाली महिला कपड़े की बिक्री हेतु उचित दाम का मांग करेंगी किंतु वहीं उसे खरीदने वाली महिला कपड़े को कम से कम दाम में खरीदने की कोशिश करेगी। ऐसे में दोनों के आपसी हितों हितो के मध्य टकराव उत्पन्न होगा और महिला एकता का बन्धन निरन्तर कमजोर होगा। इसीलिए 'MARIA MIES' कहती हैं कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया महिला एकता में बाधक सिद्ध होगी तथा जिसका प्रभाव सम्पूर्ण मानव जाति पर पड़ेगा।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि अभी भी महिलाओं के सशक्तीकरण हेतु बहुत कुछ किया जाना बाकी है। इस सन्दर्भ में संयुक्त राष्ट्र संघ ने महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए कई प्रस्ताव दिए, जैसे स्त्री पुरुष के लिए समान कार्य हेतु समान वेतन, महिलाओं को विभिन्न संसाधनों, रोजगार के अवसर, बाजार व्यवस्था, व्यापार एवं सूचना प्रोद्योगिकी आदि में बराबरी का हिस्सा मिले, कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ हाने वाले यौन उत्पीड़न एवं भेदभाव को दूर किया जाए। इस तरह वैश्वीकरण ने हमें एक ऐसी पृष्ठभूमि प्रदान करने का कार्य किया है, जिसमें हम विभिन्न लैंगिक पूर्वाग्रहों से बाहर निकल कर एक गरिमापूर्ण जीवन जीने की परिस्थिति उत्पन्न करें, कतिपय विभिन्न देशों में ऐसा हुआ भी है जैसा कि वैश्वीकरण एवं नारीवाद के मध्य संबंध पर 'चो' का मानना है कि वैश्वीकरण अपने आप में नारी युक्त हैं। निष्कर्षतः कहें तो वैश्वीकरण महिला सशक्तिकरण व महिला कामगारों के रोजगार सुरक्षा पर वैश्वीकरण का सकारात्मक व नकारात्मक अर्थात् मिश्रित प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण ने जहॉ एक तरफ महिलाओं को नई उॅचाईयां दी है तो वहीं वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप महिलाओं के समक्ष अनेक समस्यायें भी पिकल कर सामने आयी हैं। जैसा कि अपनी पुस्तक ''समसामयिक राजनीतिक सिद्धान्त'' में नरेश दाधीच ने लिखा है कि आज ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह एक समाप्त न होने वाली प्रक्रिया है क्योंकि इसका क्षेत्र, भाव–प्रवणता, पहुॅच और प्रभाव गुणात्मक व संख्यात्मक रूप से विशेष प्रकार का बन चुका है। किन्तु आज विभिन्न देषों द्वारा संरक्षणवाद पर जोर दे कर निजी हित में वैश्वीकरण की अवधारणा को कमजोर किया जा रहा है। इस प्रकार संक्षेप में कहें तो वैश्वीकरण की प्रक्रिया में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है किंतु अपेक्षित सुधार अभी भी बाकी है।

सन्दर्भ

1. पाण्डेय, तेजस्कर, संगीता पाण्डेय, भारत में सामाजिक समस्याएं, नयी दिल्ली, टाटा मैक्ग्रा हिल एजूकेशन प्रा0 लि0, 2012
2. साधना आर्य, निवेदिता मेनन व जिनी लोकनीता (सम्पादक) (2015)– नारीवादी राजनीतिः संघर्ष एवं मुद्दे, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
3. दाधीच, नरेश, समसामयिक राजनीतिक सिद्धान्त, जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स्, 2015
4. चंदन, संजीवः महिला आरक्षणः मार्ग और मुश्किलें, 2016.
5. चौबे, कमल नयन, (अनु0), समकालीन राजनीति–दर्शन : एक परिचय, दिल्ली, पियर्सन, 2013
6. जैन एवं माथुर : आधुनिक विश्व का इतिहास, 2010.
7. दत्त एवं सुन्दरम् (एस0 चन्द): भारतीय अर्थव्यवस्था, 2016.
8. विजय लक्ष्मी (2007): 'महिला सशक्तीकरण की कुछ कोशिशें' कुरूक्षेत्र पत्रिका, मार्च
9. पाण्डेय, प्रतिभा (2007): 'भारतीय स्त्रीः दशा और दिशा', योजना पत्रिका, फरवरी
10. सिंह, बहादुर करन (2006): 'महिला और समाज', कुरूक्षेत्र पत्रिका, मार्च
11. अमर उजाला।
12. टाइम्स ऑफ इण्डिया।
13. द हिन्दू।
14. mahilaayog.up.nic.in